International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 28-30
www.educationjournal.info
Received: 22-10-2022
Accepted: 25-11-2022

डॉ. सुरेन्द्र सिंह सिनसिनवार
प्राचार्य आनन्द शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

प्रतिभा वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, महाराजा सूरजमल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सुरेन्द्र सिंह सिनसिनवार
प्राचार्य आनन्द शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

डॉ. सुरेन्द्र सिंह सिनसिनवार, प्रतिभा वर्मा

सारांश
शिक्षा मानव जीवन के लिए विकास की प्रकिया है। शिक्षा मानव की उन्नति, आधुनिकीकरण और उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति की एक कुंजी है। शिक्षा व्यक्ति को इस योग्य बनाती है कि वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में आई समस्या को सुलझा सके। मनुष्य संसार का सबसे बुद्धिमान प्राणी है। वह बुद्धि के कारण ही समस्त प्रजातियों में सबसे पृथक है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बुद्धि का सर्वोपरि स्थान रहा है। प्रत्येक मनुष्य में बुद्धि के साथ–साथ संवेग, भाव तथा अनुभूतियाँ आदि विद्यमान होते हैं जो व्यक्ति तथा उसके जीवन के लिए आवश्यक होते हैं। संवेग से जुड़ा एक नया सम्प्रत्यय है जिसे संवेगात्मक बुद्धि या भावनात्मक बुद्धि कहते हैं। यह हमारी जीवन तथा व्यावसायिक जीवन दोनों में सफलता का नया निर्धारक है। भावनात्मक बुद्धि (E.I.) दो शब्दों से मिलकर बना है– (Emotion) संवेग तथा (Intelligence) अर्थात् बुद्धि। विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धि का गुण रहता है तथा इनका उच्च व निम्न स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पर्याप्त प्रभाव डालती है। प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया जाएगा। शोध की परिकल्पना है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध हेतु न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों (100 छात्र एवं 100 छात्राएँ) को लिया गया है। प्रस्तुत शोध भरतपुर शहर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित है। छात्रों के भावनात्मक बुद्धि के आँकड़ों के संग्रहण हेतु इमोशनल इंटेलीजेंस स्केल डॉ. नेहा शर्मा तथा डॉ. सुधा कुमारी शर्मा द्वारा रचित का प्रयोग किया गया है तथा शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के गत वर्ष के प्राप्तांकों का प्रतिशत को लिया गया है। साँख्यिकीय विधियों के रूप में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। भावनात्मक बुद्धि प्रमापनी पर प्रदत्तों के विश्लेषण के उपरान्त निष्कर्ष रूप में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। शोध से प्राप्त निष्किर्ष विद्यार्थियों के लिए, पालकों के लिए, शिक्षकों, शिक्षा नीति निर्धारकों, प्रबंधकों तथा भावी शोधकर्ताओं आदि के लिए उपयोगी साबित होंगे।

कूटशब्दः भावनात्मक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि, संवेगात्मक बुद्धि

प्रस्तावना
महात्मा गांधी के विचारों के अनुसार केवल साक्षरता, पढ़ना एवं लिखना ही शिक्षा नहीं है। जो लोग साक्षरता को ज्ञान मान लेते हैं उनके बारे में गांधी जी का कहना है –''साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न ही शिक्षा का आरम्भ। वह केवल एक साधन है जिससे पुरूष और स्त्री को साक्षर किया जा सकता है।'' शिक्षा मानव जीवन के लिए विकास की प्रकिया है। शिक्षा मानव की उन्नति, आधुनिकीकरण और उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति की एक कुंजी है। शिक्षा की तड़प आंतरिक प्रेरणा और मानव संसाधन विकास में सहायक है। इसप्रकार शिक्षा मानव जाति के ज्ञान संवर्धन के लिए एवं गर्व के साथ जीवित रहने के लिए एक सतत् प्रक्रिया है।

मनुष्य संसार का सबसे बुद्धिमान प्राणी है। वह बुद्धि के कारण ही समस्त प्रजातियों में सबसे पृथक है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बुद्धि का सर्वोपरि स्थान रहा है। बुद्धि के अर्थ एवं उसकी प्रकृति से अवगत होने के लिए बहुत लम्बे समय से प्रयास किये जाते रहे हैं। प्रायः उस व्यक्ति को बुद्धिमान कहा जाता है जो जीवन की सामान्य स्थितियों को सामना करने में सफल हो। ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि के साथ–साथ संवेग तथा भाव भी प्रदान किए हैं शून्य या भावहीन प्राणी मनुष्य नहीं हो सकता, वह पशु मात्र है। प्रत्येक मनुष्य में बुद्धि के साथ–साथ संवेग, भाव तथा अनुभूतियाँ आदि विद्यमान होते हैं जो व्यक्ति तथा उसके जीवन के लिए आवश्यक होते हैं।

संवेग से जुड़ा एक नया सम्प्रत्यय है जिसे संवेगात्मक बुद्धि या भावनात्मक बुद्धि कहते हैं। यह हमारी जीवन तथा व्यावसायिक जीवन दोनों में सफलता का नया निर्धारक है। भावनात्मक बुद्धि (E.I.) दो शब्दों से मिलकर बना है– (Emotion) संवेग तथा (Intelligence) अर्थात् बुद्धि। भावनात्मक बुद्धि पद का प्रयोग 1990 में सबसे पहले दो अमेरिकन प्रोफेसरों डॉ. जॉन मेयर

तथा डॉ. पीटर सेलोवे द्वारा एक ऐसा वैज्ञानिक प्रमाप तैयार करने हेतु किया गया था जिससे लोगों की भावनात्मक क्षेत्र में विद्यमान वैयक्तिक योग्यताओं में विभेदीकरण किया जा सके। परन्तु जिस रूप में आज भावनात्मक बुद्धि पद की सर्वत्र चर्चा की जाती है, उसे इस तरह से लोकप्रिय बनाने का श्रेय केवल मात्र एक अमेरिकन मनोवैज्ञानिक डेनियल गोलमैन को ही जाता है। उसी ने अपनी 1995 में प्रकाशित एक पुस्तक 'संवेगात्मक बुद्धि : बुद्धि लब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों'' के माध्यम से इसे विशेष चर्चा का विषय बनाया है।

शिक्षा सीखने की प्रक्रिया का फल है। आदमी हर पल कुछ न कुछ सीखता है। सीखना मानव जीवन की सतत् प्रक्रिया है। किन्तु व्यक्ति व्यवस्थित रूप से शिक्षा विद्यालय में ही अर्जित करजा है। विद्यालय में अर्जित ज्ञान का मापन एवं मूल्यांकन किया जाता है और उसी के आधार पर विद्यार्थियों को अगली कक्षा में प्रवेश दिया जाता है। इसप्रकार कक्षा परिवर्तन कर आगे बढ़ने की प्रक्रिया को शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं।पहले सामान्य लोगों का यह विश्वास था कि उपलब्धि के लिए केवल बुद्धि जिम्मेदार है। किन्तु इस क्षेत्र में हुए अनुसन्धान इस तरफ संकेत करते हैं कि बुद्धि का योगदान 50 प्रतिशत से भी कम है। इसका मतलब है कि 50 प्रतिशत से भी अधिक बुद्धि के अलावा अन्य कारकों का भी योगदान है। इन कारकों में गैर बौद्धिक (non-intellectual) बुद्धि, सामाजिक बुद्धि, सांवेगिक बुद्धि, आध्यात्मिक बुद्धि भावनात्मक बुद्धि के अलावा विभिन्न प्रकार के शारीरिक एवं समाज मनोवैज्ञानिक कारकों तथा सृजनात्मकता का नाम आता है जो शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पर्याप्त प्रभाव डालती है। प्रस्तुत कार्य इसी कार्य में किया जाने वाला एक प्रयास है।

अध्ययन की आवश्यकता/औचित्य

मनुष्य एक बौद्धिक तथा भावनात्मक प्राणी है। वह अपनी बौद्धिक क्षमता के कारण ही अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है। संवेगात्मक प्रवृत्ति प्रायः प्रत्येक प्राणी में होती है। बुद्धि के प्रयोग से ही मानव ने अपने जीवन को सुखमय बनाते हुए स्वयं का विकास किया है। प्रत्येक मनुष्य में बुद्धि के साथ–साथ संवेग, भाव, अनुभूतियाँ आदि विद्यमान होते हैं जो व्यक्ति तथा उसके जीवन के लिए आवश्यक होते हैं। संवेगात्मक बुद्धि हृदय तथा मस्तिष्क का संयुक्त रूप है। संवेगात्मक बुद्धि हृदय तथा मस्तिष्क दोनों का ही अन्तःखण्ड है जो अपने संवेगों के प्रयोग करने की योग्यता, समस्याओं को हल करने में सहायक तथा प्रभावी जीवन जीने की क्षमता है। अन्य शब्दों में इसप्रकार कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि सीखने, पहचानने, वर्णन करने, सहज महसूस करने तथा अपने भावनाओं का समझने की क्षता है। संवेगात्मक बुद्धि हमारे जीवन तथा व्यावसायिक जीवन दोनों में सफलता का नया निर्धारक है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण काल अर्थात् किशोरावस्था से गुजर रहा होता है। उसके संवेगों, भावनाओं में प्रतिपल परिवर्तन होते दिखाई देते हैं। इसलिए स्टेनले हॉल ने इसे, "तूफान और दबाव की अवस्था" कहकर सम्बोधित किया है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धि का गुण विद्यमान रहता है तथा इन दोनों का उच्च व निम्न स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पर्याप्त प्रभाव डालता है। यह जानते हुए शोधकर्त्री ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने हेतु इस विषय का चयन किया।

समस्या कथन

''माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी – इससे तात्पर्य नियमित विद्यालय जाने वाले उन सभी बालक–बालिकाओं से है जो कक्षा 9 व 10 में अध्ययन करते हैं।

भावनात्मक बुद्धि

भावनात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति विशेष की उस समग्र क्षमता (सामान्य बुद्धि से सम्बन्धित होते हुए भी अपने आप में स्वतंत्र) से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा उनकी ऐसी उचित अनुभूति एवं अभिव्यक्ति करने व कराने में इसप्रकार मदद करे कि वह ऐसी वांछित व्यवहार अनुक्रियाँ कर सके जिनसे उसे दूसरों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपना समुचित हित करने हेतु अधिक से अधिक अवसर प्राप्त हो सकें।

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि में दो शब्द हैं – शैक्षिक व उपलब्धि। शैक्षिक शब्द ज्ञान से सम्बन्धित है तथा उपलब्धि ज्ञान के अर्जन से संबंधित है। छात्रों के विद्यालय में अध्ययन विषय सम्बन्धी प्रगति जो कि परीक्षण द्वारा जाँची जाती है, शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के भावनात्मक बुद्धि का अध्ययन करने के लिए 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है। यह विधि वर्तमान स्थितियों की प्रकृति का स्थूल रूप में वर्णन करने हुए समस्या का उत्तर देने में सर्वाधिक उत्तम है।

न्यादर्श

अनुसंधान कार्य में न्यादर्श का बहुत महत्व है। शोध कार्य समय, साधन तथा सुविधा की कमी के कारण न्यादर्श से आँकड़ों का संकलन कर उनका विश्लेषण कर विवेचन करता है। शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श रूप में माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के 200 विद्यार्थियों को लिया गया है। 200 विद्यार्थियों में 100 छात्र एवं 100 छात्राएँ सम्मिलित हैं।

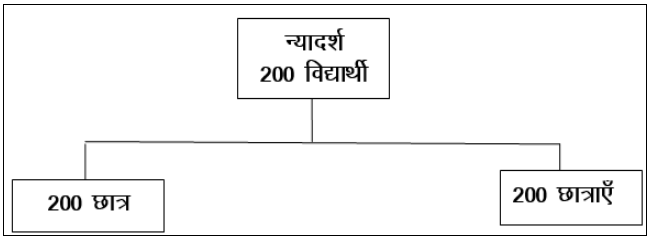

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन – N = 200

चर	माध्य	मानक विचलन	सांख्यिकीय मान		
			त	ज	च
शैक्षिक उपलब्धि	58.70	5.91	+0.111	1.572	झ0ण्05
भावनात्मक बुद्धि	194.75	37.14			

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपर्युक्त सारणी के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं भावनात्मक बुद्धि प्रमापनी पर प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 58.70 तथा 194.75 एवं मानक विचलन क्रमशः 5.91 तथा 37.14 पाया गया। इनके मध्य सह–सम्बन्ध +0. 111 तथा 'टी' मान 1.572 प्राप्त हुआ जो कि टी– मान सारणी के 0.05 सार्थकता मल्य 1.98 से कम पाया गया है। चयनित विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि की उनकी शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक एवं असार्थक सम्बन्ध पाया गया। उससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया जाता।

परिकल्पना – ''माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता'' स्वीकृत की जाती है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा उपकरण के रूप में प्रमापीकृत उपकरण का प्रयोग किया है। इस शोध में डॉ. नेहा शर्मा तथा डॉ. सुधा कुमारी शर्मा द्वारा रचित इमोशनल इंटेलीजेंस स्केल का प्रयोग किया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण
4. सह–सम्बन्ध

शोध का परिसीमांकन

शोध कार्य के लिए शोध की परिसीमाएँ निर्धारित करना आवश्यक है क्योंकि परिसीमाएँ निर्धारित कर देने से परिणाम सही प्राप्त होते हैं इसलिए शोध क्षेत्रों को एक निश्चित सीमा में बाँधा जाता है। परिसीमांकन समय एवं धन की न्यूनता के लिए भी आवश्यक है।

शोधकर्त्री ने शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिसीमाएँ निश्चित की हैं –

1. यह शोध अध्ययन भरतपुर शहर तक ही सीमित रखा गयाा है।
2. प्रस्तुत शोध के लिए माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध के लिए 100 छात्र एवं 100 छात्राओं को शामिल किया गया है।

शोध निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
2. विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि का मध्यमान उनकी शैक्षिक उपलब्धि से अधिक पाया गया है।
3. चयनित विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि की उनकी शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक एवं असार्थक सम्बन्ध पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

विद्यालयों में आदर्श वातावरण का निर्माण कर विद्यार्थियों को भावनात्मक बुद्धि से परिपक्व करना चाहिए ताकि वे भावनात्मक रूप से सुदृढ़ हो कर अपने संवेगों को नियंत्रित कर अपनी शैक्षिक उपलब्धता को बढ़ा सकें।

भावी शोध हेतु सुझााव

निश्चित समय सीमा व समयानुकूल परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शोध अध्ययन सीमित न्यादर्श 200 विद्यार्थियों पर किया गया है, हो सकता है कि इसके परिणाम या निष्कर्ष सामान्यीकरण के स्तर पर सार्थक सिद्ध न हो सकें। वर्तमान समस्या को दृष्टिगत रखते हुए भविष्य में इन पर शोध कार्य किए जा सकते हैं। अतः भावी शोध अध्ययन हेतु कुछ सुझाव निम्नानुसार अपेक्षित हैं –

1. वर्तमान शोध कार्य भरतपुर जिले के विद्यार्थियों को लेकर किया गया है अतः राजस्थान के अन्य जिलों या शहरों के विद्यार्थियों को लेकर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
2. वर्तमान शोध कार्य में 200 विद्यार्थियों को लिया गया। इसमें और अधिक न्यादर्श को लेकर अध्ययन किसा जा सकता है।
3. वर्तमान शोध कार्य में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया है, अतः भविष्य में प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्च माध्यमिक एवं महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
4. वर्तमान शोध कार्य में केवल शहरी क्षेत्र के राजकीय विद्यालयों को शामिल किया गया है अतः भविष्य में शहरी क्षेत्र के निजी विद्यालयों, ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय एवं निजी विद्यालयों को लेकर भी शोध कार्य किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना, विपिन (1997) – मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. अरोडा, रीता एवं भारवाह सुदेश – शिक्षा मनोविज्ञान एवं साख्यिकी 23 भगवानदास मार्केट चौड़ा रास्ता, जयपुर।
3. भार्गव, महेश (1991) – मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
4. भटनागर, आर० पी० एवं भटनागर. एम० (1992) – मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन आर०लाल बुक डिपो, मेरठ
5. बुच. एम. बी (1991) – चतुर्थ सर्वे, रिसर्च इन एजुकेशन – 1983 – 1998 वॉल्यूम–।, ।। एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली – 16
6. गुप्ता, आर०सी एवं भट्ट (1981) – शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा
7. जायसवाल सीताराम (1961) – शिक्षा शास्त्र, 12 वां एडीशन, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स वाराणसी
8. जायसवाल, सीताराम (संवत 2030) – चारों देशों की शिक्षा प्रणालियाँ, प्रकाशन केन्द्र नई बिल्डिंग, अमीनाबाद, लखनऊ
9. कॉल, लोकेश (1998) – शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली